जनसत्ता

दोहरेपन की नीति

हाल में अबु धाबी में हुए इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआइसी) के विदेश मंत्रियों के सम्मेलन में भारत को आमंत्रित कर इस संगठन ने यह संदेश दिया था कि बदलते वक्त के साथ वह भी बदल रहा है और इसका दायरा सिर्फ मुसलिम देशों तक सीमित नहीं रहेगा। इसलिए पाकिस्तान के कड़े विरोध और बहिष्कार के बावजूद विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में भारत को बुलाया गया। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ने इसके लिए पहल की थी। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने इस मंच से आतंकवाद फैलाने वालों को चेताया। भारत के लिए यह बड़ी कूटनीतिक उपलब्धि थी कि ओआइसी ने पाकिस्तान के विरोध को कोई तवज्जो नहीं दी और भारत को अपने मंच से बात रखने का मौका दिया। लेकिन भारत की इस कामयाबी को उस वक्त बड़ा धक्का लगा जब सम्मेलन की समाप्ति पर जो प्रस्ताव जारी किया गया, उसमें कश्मीर मसले को उठाया गया। इस प्रस्ताव में कश्मीर को लेकर भारत के रुख की आलोचना की गई है और भारत पर आरोप लगाया गया है कि वह कश्मीरियों के खिलाफ बल प्रयोग कर रहा है और उनके मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रहा है।

भारत को यह उम्मीद नहीं रही होगी कि जो ओआइसी उसे सम्मान और सदाशयता के तौर पर आमंत्रित कर रहा है, वह पीछे से उसे घेरने की किसी रणनीति पर भी चल सकता है। ओआइसी के मंच से कश्मीर मसले को उठाया जाना बता रहा है कि भले पाकिस्तान ने इस बैठक बहिष्कार किया हो, लेकिन उसका दबदबा कम नहीं हुआ और वह अपने मकसद में कामयाब रहा। अगर पाकिस्तान इस बैठक में होता तो भी कश्मीर का मुद्दा उठाने से वह नहीं चूकता। सिर्फ ओआइसी नहीं, हर वैश्विक मंच से पाकिस्तान कश्मीर को लेकर राग अलापता रहा है। ओआइसी में कश्मीर मुद्दा उठा है और इस पर पाकिस्तान का समर्थन किया गया है तो इसका सीधा-सीधा मतलब यही है कि सत्तावन देश इस मसले पर किसी न किसी रूप में पाकिस्तान के साथ हैं। वे उसी भाषा और रुख का समर्थन करेंगे जो पाकिस्तान का होगा। साफ है कि इससे ओआइसी में पाकिस्तान के खिलाफ भारत की बड़ी कूटनीतिक उपलब्धि का वजन थोड़ा कम हुआ है।

ऐसे में ओआइसी के रुख पर भारत की नाराजगी स्वाभाविक ही है। भारत ने दो-टूक कह दिया है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है और यह मुद्दा भारत की आंतरिक सुरक्षा से संबंधित है। ओआइसी की बैठक में भारत को बुलाया जाना इस बात का संकेत माना जा रहा था कि आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को एक कड़ा संदेश दिया जा रहा है। लेकिन ओआइसी के प्रस्ताव में पाकिस्तान की भाषा है। स्पष्ट है कि सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश भारत के साथ अच्छे रिश्तों का सिर्फ दिखावा कर रहे हैं और हकीकत से मुंह मोड़ रहे हैं। क्या ओआइसी इस बात से अनजान है कि पाकिस्तान पिछले तीन दशकों से भारत के खिलाफ आतंकवाद को शह देना जारी रखे हुए है और अपने यहां पल रहे आतंकी संगठनों से भारत पर बड़े-बड़े आतंकी हमले करा चुका है। जब सऊदी अरब का सबसे करीबी सहयोगी अमेरिका भी आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को चेतावनी देता रहा है तो ओआइसी को क्यों नहीं पाकिस्तान के खिलाफ कदम उठाना चाहिए? इससे ओआइसी के दोहरेपन की नीति का पता चलता है कि एक ओर वह भारत को अहमियत देने का संदेश दे रहा है, दूसरी ओर भीतर से पाकिस्तान के साथ है। कश्मीर पर भारत के खिलाफ जो रुख इस सम्मेलन में अपनाया गया है, वह पीछे से वार करने की साजिश से कम नहीं माना जा सकता।

बेहतर रास्ता

रविवार को दक्षिण कोरिया और अमेरिका के वार्षिक संयुक्त युद्धाभ्यास को बंद करने की घोषणा को मौजूदा विश्व की स्थिति के मद्देनजर एक अहम घटनाक्रम के रूप में देखा जा सकता है। यह सही है कि किसी एक छोटी घटना या मामले की वजह से शांति या फिर किसी भी यथास्थिति में अक्सर तेजी से बदलाव आता दिखता है और कई बार सब कुछ ठीक होने के बाद उस पर पानी फिर जाता है। मगर दक्षिण कोरिया और अमेरिका के ताजा फैसले की पृष्ठभूमि में चूंकि उत्तर कोरिया के साथ संबंधों और संभावित हालात का भी खयाल है, इसलिए उम्मीद की जानी चाहिए कि समूचे कोरियाई प्रायद्वीप की शांति की दिशा में यह एक अहम पहलकदमी साबित होगी। आमतौर पर साल के इन्हीं महीनों के दौरान किया जाने वाला 'फोल ईगल' अभ्यास अमेरिका और दक्षिण कोरिया के बीच होने वाला एक बड़ा संयुक्त सैन्य अभ्यास है। ऐसे मौके पहले भी आए हैं जब उत्तर कोरिया ने इस युद्धाभ्यास को क्षेत्रीय समस्या पैदा करने वाला एक मुख्य कारक बताया है और अपनी स्पष्ट नाराजगी जाहिर की है। बल्कि इस आयोजन को वह घुसपैठ की कोशिश भी बताता रहा है। अब फिलहाल युद्धाभ्यास को स्थगित करने के फैसले के बाद देखना है कि इसे अमेरिका और दक्षिण कोरिया की सेना की तैयारियों को लेकर क्या आकलन सामने आते हैं।

गौरतलब है कि हाल ही में उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच हुई बातचीत एक तरह से बेनतीजा रही। उत्तर कोरिया ने साफ तौर पर यह जता दिया कि जब तक उस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों को नहीं हटाया जाता है, तब तक परमाणु हथियारों को कम करने या निरस्त्रीकरण को लेकर उससे बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। हालांकि उत्तर कोरिया का कहना है कि उसने प्रतिबंधों में आंशिक राहत देने की ही मांग की थी। लेकिन अमेरिका का रुख इसके प्रति सकारात्मक नहीं दिख रहा है। जाहिर है कि अगर यही स्थिति बनी रही तो इस क्षेत्र में अमेरिका और दक्षिण कोरिया के बीच सहयोग और खासतौर पर युद्धाभ्यास के मसले पर उत्तर कोरिया की प्रतिक्रिया का अंदाजा लगाया जा सकता है। यह प्रतिक्रिया प्रत्यक्ष और सैन्य न भी हो तो शायद शांति की स्थितियों के लिए सकारात्मक नहीं होगी। इसलिए अगर युद्धाभ्यास की प्रक्रिया को कुछ समय के लिए टाला जाता है तो इसे तनाव बढ़ने की चिंता से निपटने की कोशिश के तौर पर देखा जाएगा। इससे दोनों पक्षों के बीच सैन्य कार्रवाई की तीव्रता को कम करने में मदद मिलेगी।

दरअसल, पिछले कुछ समय से उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया अपने मसलों को हल करने के लिए एक सहज हालात बनाने की कोशिश में हैं। ऐसे में दक्षिण कोरिया को भी इस बात का एहसास होगा कि युद्ध और तनाव के माहौल में किस ओर बढ़ा जा सकेगा। शायद इसी पृष्ठभूमि में अमेरिका और दक्षिण कोरिया के बीच इस बात पर सहमति बनी कि फिलहाल वार्षिक संयुक्त युद्धाभ्यास को रोक दिया जाए, ताकि शांति की ओर बढ़ते कोरियाई प्रायद्वीप में तनाव या टकराव की किसी नई स्थिति से बचा जा सके। बल्कि कहा जा सकता है कि इस पहलकदमी का एक मुख्य मकसद उत्तर कोरिया से जुड़े संकट को खत्म करने की कोशिश है, जो इसे आक्रमण की मंशा से किए जा रहे अभ्यासों के तौर पर देखता है। यों भी, किसी भी युद्ध के नतीजे का अंदाजा लगाना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं होता। इसलिए युद्ध की स्थिति पैदा होने से पहले ही अगर उसे खत्म करने की कोशिश होती है तो यह एक शांतिपूर्ण विश्व के हित में होगी।

कल्पमेधा

अगर एक देश को भ्रष्टाचार मुक्त होना है तो तीन ऐसे लोग हैं जो यह कर सकते हैं और वे हैं माता, पिता और शिक्षक।
-एपीजे अब्दुल कलाम

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और बच्चे

सुभाष चंद्र लखेड़ा

हमारी वैज्ञानिक चेतना का स्तर क्या है? सरकार और समाज के समक्ष यह गंभीर सवाल है। दरअसल, अभी भी हमारी जनता का एक बहुत बड़ा हिस्सा अज्ञान का बोझ ढो रहा है। यदि समाज में अराजकता पर अंकुश नहीं लगता तो हम पुलिस को कोसते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो समाज में व्याप्त अंधविश्वासों पर अंकुश न लगने के लिए वे लोग जिम्मेदार हैं जिन पर वैज्ञानिक सोच विकसित करने की जिम्मेदारी है।

आधुनिक युग को विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए यह जरूरी है कि हम अपने बच्चों को ऐसी सभी जानकारियां देने के उपाय करें जो उनमें वैज्ञानिक सोच पैदा करने और उसे बढ़ाने में सहायक हों। आखिर, आज के बच्चे ही आने वाले समय में राष्ट्र का नेतृत्व संभालेंगे। हमारे यहां जाने-अनजाने समाज का एक बड़ा हिस्सा आज भी अपने बच्चों को उसी अंधेरे में रखना चाहता है जिसमें लोग स्वयं पले-बढ़े हैं। ऐसे संगठनों की भी कमी नहीं है जो चाहते हैं कि बच्चों की सोच को एक ऐसे सांचे में ढालना निहायत जरूरी है जो उनके एजेंडे को बढ़ाने में सहायक हो। विभिन्न धार्मिक संगठन इस दिशा में कोशिशें करते रहते हैं। बहरहाल, भारत जैसे देश में इस तरह के कार्यों पर अंकुश लगाना संभव नहीं है, किंतु वैचारिक स्वतंत्रता में यकीन रखने वाले लोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के हिमायती अपनी तरफ से ऐसी कोशिशें कर सकते हैं जिनसे भारत की नई पीढ़ी को उस सोच से बचाया जा सके जो व्यक्ति को मानसिक रूप से गुलाम और असहिष्णु बनाती है। प्रजातंत्र की मजबूती के लिए भी ऐसा करना बेहद जरूरी है। इस सिलसिले में गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा कही हुई यह बात गौरतलब है कि किसी बच्चे की शिक्षा अपने ज्ञान तक सीमित मत रखिए, क्योंकि वह किसी और समय में पैदा हुआ है।' यहां मुख्य बात यह है कि बच्चों को किसी विषय से संबंधित सटीक जानकारी वही व्यक्ति दे सकता है जिसे स्वयं उस विषय का ज्ञान हो। यदि हमें किसी विषय का स्वयं ज्ञान नहीं है तो फिर हमें आधी-अधूरी जानकारी देने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

ब्रिटेन में हुए एक अध्ययन से ज्ञात हुआ कि लगभग चालीस फीसद अध्यापक छात्रों को विज्ञान पढ़ाते समय गलतियां करते हैं। बच्चों के लिए विज्ञान संबंधी लेखन करते समय भी हमें सजग रहना चाहिए, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है। राह वही बताए जिसे स्वयं उस रास्ते के बारे में पूरी जानकारी हो। ऐसा न हो कि जो बच्चा आप से बुखार की दवा मांग रहा हो, आप उसे सरदर्द की दवा थमा रहे हों। अक्सर हमें यह सलाह सुनने को मिलती है कि बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने के लिए उनमें अपने आसपास की चीजों को समझने की प्रति जिज्ञासा पैदा करनी चाहिए। जबकि जिज्ञासा मनुष्य के जन्मजात स्वभाव का अंग है। इतना जरूर है कि इस जिज्ञासा का परिमार्जन कर इसे बढ़ाया जा सकता है, बिलकुल वैसे ही जैसे खेलना बच्चों का जन्मजात गुण होता है और उसे सही खानपान और प्रशिक्षण से सही दिशा दी जा सकती है। खेद की बात तो यह है कि कुछ लोग विज्ञान का सही अर्थ नहीं समझ पाते हैं। वे सोचते हैं कि विज्ञान को समझने-बूझने के लिए मोटे-मोटे पोथे पढ़ना और विभिन्न तरह के उपकरणों से घिरे रहना बेहद जरूरी है। दरअसल, विज्ञान तो वह सरल ज्ञान है जिसे कोई भी समझदार व्यक्ति आसानी से समझ सकता है और उसका सही ढंग से उपयोग कर सकता है।

बच्चों को विज्ञान का लाभ तभी मिल सकता है जब अभिभावक और अध्यापक इस ओर ध्यान देंगे। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम बच्चों को सरल ढंग से विज्ञान समझाएं। अगर हमारा ध्यान इस ओर होगा तो उसका दोहरा लाभ होगा। हमारे बच्चे स्वस्थ होंगे और वे अपने जीवन को वैज्ञानिक तरीके से जीने की कला में माहिर होते जाएंगे। बच्चों को ऐसी बातें ठीक तरह से तभी समझ आएंगी जब हमारा स्वयं का जीवन दर्शन वैसा होगा। केवल सैद्धांतिक ज्ञान देने से बात नहीं बनेगी। यदि हमारे बच्चे वैज्ञानिक तरीके से जीना सीख गए तो इस बात में कोई संदेह नहीं कि इसका लाभ केवल हमें नहीं, सारी दुनिया को मिलेगा। दरअसल, आज दुनिया जिन समस्याओं का सामना कर रही है, उसका कारण सिर्फ यह है कि हमने अपने बच्चों को यह नहीं बताया कि जीने की वैज्ञानिक कला क्या है और उससे हम अपने और दूसरों के जीवन को कैसे बेहतर बना सकते हैं?

आज दुनिया के सभी देश जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं उनमें भूख और बीमारी प्रमुख हैं। यदि हम बच्चों को शुरू से ही सही जानकारी देंगे तो इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। तीन-चार वर्ष की आयु से ही बच्चों को यह बताना

चाहिए कि भोजन का मानव के लिए क्या महत्त्व है और हमें उसे बर्बाद क्यों नहीं करना चाहिए। बढ़ती उम्र के साथ-साथ बच्चों को यह जानकारी भी देनी जरूरी है कि पौष्टिक आहार का क्या अर्थ है? खेद की बात तो यह है कि हम बच्चों को इस बारे में जानकारी देना तो दूर, उन्हें फास्ट फूड का आदी बना देते हैं। बाद में जब बच्चों को ऐसे खाद्य पदार्थों की आदत पड़ जाती है तो हम शिकायत करने लगते हैं। कई बीमारियों का ताल्लुक हमारे आहार से भी है। ऐसे में हम बच्चों में बचपन से ही संतुलित आहार लेने की आदत डाल कर इन समस्याओं के समाधान में योगदान दे सकते हैं।

बच्चों के बारे में एक प्रसिद्ध नियम है कि पेड़ वैसा ही आकार लेगा जैसे उसका पौधा तैयार किया जाएगा। हमें बच्चों को बचपन से ही साफ-सफाई के बारे में बताना चाहिए। व्यक्तिगत सफाई जरूरी है, लेकिन उससे कहीं अधिक जरूरी उस वातावरण को साफ रखना है जिसमें हम लोग रहते हैं और विचरण करते हैं। बच्चों को यह समझाना चाहिए कि वे अपने घर, स्कूल और आसपास के स्थानों को साफ-सुथरा रखने में कैसे मदद कर सकते हैं। आज हम सभी प्रदूषण की बात करते हैं। बच्चों को बताया जाना चाहिए कि कौन से काम नहीं करने चाहिए जिनसे प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है। उन्हें यह समझाया जाना चाहिए कि जहां तक संभव हो वे पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों का तभी प्रयोग करें जब जरूरत हो। नजदीक के काम पैदल चल कर अथवा साइकिल का इस्तेमाल कर किए जा सकते हैं। इसी तरह यदि हम बेमतलब बिजली का इस्तेमाल करते हैं तो उससे केवल हमारा बिजली का बिल नहीं बढ़ता बल्कि पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचता है।

हमारी वैज्ञानिक चेतना का स्तर क्या है? सरकार और समाज के समक्ष यह गंभीर सवाल है। दरअसल, अभी भी हमारी जनता का एक बहुत बड़ा हिस्सा अज्ञान का बोझ ढो रहा है। यदि समाज में अराजकता पर अंकुश नहीं लगता तो हम पुलिस को कोसते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो समाज में व्याप्त अंधविश्वासों पर अंकुश न लगने के लिए वे लोग जिम्मेदार हैं जिन पर वैज्ञानिक सोच विकसित करने की जिम्मेदारी है। देश में वैज्ञानिक वातावरण बने और लोगों में वैज्ञानिक चेतना पैदा हो, इसके लिए जरूरी है कि लोगों तक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे कार्यों की जानकारी पहुंचती रहे। इसके लिए देश में विभिन्न भाषाओं में ऐसी पत्र-पत्रिकाएं होनी चाहिए जो विज्ञान और तकनीकी विषयों की जानकारी लोगों को पहुंचाती रहें। साथ ही आज हमारे पास लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के जो भी संसाधन उपलब्ध हैं, उनका इस कार्य में उपयोग होना चाहिए। प्रसिद्ध दार्शनिक लारी लोडान के शब्दों में 'विज्ञान का उद्देश्य समस्याओं के समाधान के लिए अधिक प्रभावी सिद्धांतों की खोज करना है।' किंतु हम अपनी समस्याओं के समाधान के लिए इन अधिक प्रभावी सिद्धांतों का उपयोग तभी कर सकते हैं जब अपनी भाषाओं और संचार के सभी आधुनिक माध्यमों के जरिए इन्हें जनता के सभी वर्गों तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे, अन्यथा हमारा सारा विज्ञान यों ही निष्क्रिय पड़ा रहेगा।

बाजार में हुनर

तनिष्का वैद्य

दुनिया मेरे आगे

खरीदारी करने इस बार कस्बे के बाजार में जाना पड़ा। आमतौर पर महानगरों में मॉल कही जाने वाली बहुमंजिला इमारतों में सजे बाजार से सामान खरीदने के मुकाबले कस्बे की खरीदारी बिल्कुल अलग होती है। यहां सड़कों के किनारे छोटी-छोटी अस्थायी दुकानें सजी होती हैं। इनमें ज्यादातर लोक कलाओं और लोगों के हुनर से तैयार चीजें मिलती हैं। जैसे गांवों में हाट या मेले लगते हैं। उत्सव या त्योहारों के समय कस्बे में सड़क के दोनों तरफ दूर तक ऐसी रंग-बिरंगी दुकानें हुआ करती थीं। होली, दिवाली, राखी, नवरात्र आदि अवसरों पर यही दृश्य दिखाई पड़ते थे।

लेकिन बीते चार-पांच महीनों के दौरान लोगों की व्यापक भागीदारी वाले त्योहारों के मौके पर बाजार उस रूप में नहीं था। यहां भी तैयार कपड़े या फिर रेडीमेड ने अपने पांव पसार लिए थे। इस बाजार में पीढ़ियों पुरानी हुनर से तैयार होने वाली वस्तुएं कहीं नजर नहीं आ रही थीं। लोक कलाएं तो खैर पहले से ही कम होती जा रही हैं। त्योहार धीरे-धीरे अपने लोक कला के उत्सवी रंगों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। त्योहारों में आते नित नए बदलावों से बाजार को तो फायदा मिल रहा है, लेकिन अंचल की लोककला का कौशल और हुनर खत्म हो रहा है। लगातार कई परंपराएं और विधाएं लुप्त हो रही हैं। यही हाल शादी-ब्याह के मौके का भी है।

होली जैसे त्योहारों के मौके पर घरों में मां-बहनों के हाथों से बने पकवानों का जो स्वाद मुंह में कई महीनों तक घुला रहता था, वह अब रेडीमेड मिठाइयों में कहां! कई बार तो रेडीमेड मिठाइयां और मावा बीमारियों का कारण बनता है। हर बार त्योहारों के समय हजारों क्विंटल नकली मावा और उससे बनी मिठाइयां पकड़ी जाती हैं। इसी तरह, पहले घूमते चाक के साथ जबर्दस्त तालमेल और साधना से लैस हाथों के साथ बनते मिट्टी के घड़े अब कम दिखते हैं और दीये अब सुगंधित मोमबत्तियों में बदल चुके हैं। एक समय था जब दीयों के बिना दीवाली सोची ही नहीं जा सकती थी, लेकिन अब बिजली की झालरों ने जैसे दीयों की रोशनी को फीका कर दिया है। प्लास्टिक की माला, झालरों, गुलदस्तों आदि ने गेंदे के फूलों की माला को बाजार से बाहर का रास्ता दिखा दिया। दस साल पहले तक तो लोग घर में विवाह या कोई अन्य समारोह या फिर त्योहार के मौके पर खुद गेंदे के फूलों से तोरण, मालाएं और झालर बना कर अपने घरों को सजाते थे। अब फूलों की दुकानों पर भी ज्यादा चहल-पहल नहीं दिखाई देती है। यहां तक कि घरों के दरवाजों पर भी हाथों से बने फूलों के तोरण को रेडीमेड कपड़े पर मोतियों और प्लास्टिक के तोरण से बदल दिया गया है। मिट्टी के दीयों की बात हो या फूलों की या अन्य संसाधनों की। इस तरह हम प्रकृति से भी सीधे तौर पर जुड़े रहते थे। स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग हो पाता था और कुछ खास हुनर वाले लोगों की मदद भी होती थी।

तीज-त्योहारों और उत्सवों के समय ग्रामीण अंचल में कभी समृद्ध रही मांडणों की परंपरा भी अब दम तोड़ने लगी है। बीती दिवाली पर मैंने गौर किया कि गांवों की दीवारों पर न मांडणें मिले, न फर्श पर चौक। कहीं दिखाई दिए भी तो बहुत कम और वे भी परंपरागत मांडणों से अलग। देश के हर अंचल में मांडणे की अपनी खास शैली और शिल्प होता था। इनमें सिर्फ सुंदरता नहीं, हुनर का कौशल भी झलकता था। पहले दिवाली पर नानी-दादी सफेद खड़िया, लाल-गेरू-गुलाबी या हरे-नीले रंगों से घर के फर्श और दीवारों पर परंपरागत मांडणें बनाया करती थीं। बाजार में मिल रहे रेडीमेड चिपकाने वाले मांडणें ही अब हर घर के फर्श की शोभा बन चुके हैं।

दूसरा पहलू यह भी है कि अब त्योहार लोगों के हाथ में मौजूद मोबाइल स्क्रीन में सिमटते जा रहे हैं। कुछ साल पहले तक त्योहारों पर अंचल में एक-दूसरे के घर जाकर आशीर्वाद लेने जाने की परंपरा थी। इससे व्यक्ति अपने समाज और आसपास रहने वालों से जुड़ा रहता था। एक-दूसरे के सुख-दुख साझा होते थे। सबके साथ मिल कर मनाई जाने वाली खुशी अब पुराना किस्सा बन चुकी है। बीते सालों की तुलना में बाजार बहुत बढ़ गया, लेकिन स्थानीय हुनरमंद लोग और देसी संसाधन 'बेकाम' हो गए हैं। इससे कई लोग बेरोजगार हुए और गरीबी का ग्राफ बढ़ा। उसी अनुपात में बहुराष्ट्रीय और नामी कंपनियों का मुनाफा बढ़ गया है। बढ़ती व्यस्तता में रेडीमेड बाजार जरूर पनप रहा है, लेकिन लोगों के भीतर त्योहार का उत्साह मरता जा रहा है। पहले लोग मन की उमंगों के साथ खुशियां मनाते थे, लेकिन अब त्योहार भी औपचारिक बनते जा रहे हैं। अब बिजली के जगमग उजाले और पटाखों की गूंज में मन का सुकून और वास्तविक खुशी कहीं खो चुकी है।

नापाक मंसूबे

पाकिस्तान की नापाक हरकतें थमने का नाम नहीं ले रही हैं। पुलवामा हमले के बाद भारत की जवाबी कार्रवाई के विरोध में जब पाकिस्तानी वायुसेना ने भारतीय सीमा में घुसने की नापाक कोशिश की तो भारतीय वायु सेना ने जोरदार जवाब दिया और उसके एफ-16 विमान को मार गिराया। हालांकि इसमें भारतीय विंग कमांडर अभिनंदन को पाकिस्तान ने गिरफ्तार कर लिया था। भारतीय कूटनीतिक और अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद पाकिस्तान को आखिरकार विंग कमांडर को छोड़ना पड़ा। पाकिस्तान ने इसे शांति की तरफ बढ़ाया गया एक कदम बताया है। अपने आप को दुनिया के सामने शांति का मसीहा बताने के लिए उसने इस मौके का इस्तेमाल किया पर दूसरी तरफ भारत से लगती जम्मू-कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर लगातार गोलीबारी जारी रख कर उसने अपने असली चेहरे को भी उजागर किया है। एक तरफ वह अपने प्रधानमंत्री इमरान खान को शांति दूत बताते हुए दुनिया को उन्हें पुरस्कृत करने का अभियान चला रहा है तो दूसरी ओर भारी भरकम हथियारों से लगातार गोलाबारी भी कर रहा है।

यही नहीं, जहां पुलवामा हमले के तुरंत बाद आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने हमले की जिम्मेदारी ली वहीं पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने जैश का बचाव करते हुए कहा कि जैश ने कोई जिम्मेदारी नहीं ली। एफ-16 विमान के इस्तेमाल पर भी पाकिस्तान ने पूरी दुनिया से झूठ बोला कि उसने भारत पर हमले में इसका इस्तेमाल नहीं किया। जब भारतीय सेना ने इसके सबूत दुनिया के सामने रखे तो पाकिस्तान के झूठ का पदार्फाश हो गया। यानी एक तरफ पाकिस्तान यह दिखा रहा है कि उसने शांति की पहल की है वहीं दूसरी तरफ उसकी नापाक हरकतें लगातार अपनी चरम सीमा पर जारी हैं। पाकिस्तान सरकार के मंत्री अलग-अलग मोर्चों पर जाकर भारत को धमकाते और अपने यहां पोषित आतंकियों को बचाते हैं।

एक तरफ पाकिस्तान कहता है कि उसने भारत पर कोई हमला नहीं किया है मगर दूसरी तरफ वह विंग कमांडर अभिनंदन को रिहा करते वक्त उन्हें युद्धबंदी बताता है! यह तय है कि पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से बाज आने वाला नहीं है। इसलिए भारत ने पाकिस्तान के प्रति जो आक्रामक रवैया अपनाया है उसे और तेज करते हुए उसकी चौतरफा घेराबंदी को और बढ़ाना चाहिए। पाकिस्तान पर भरोसा करना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। भारत को पाकिस्तान पर अपनी पकड़ ढीली नहीं करनी चाहिए ताकि वह अब कभी भी ऐसी नापाक हरकत करने की हिम्मत न जुटा पाए।

● *अमन सिंह, प्रेमनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश*

सतर्कता की दरकार

आज जितनी जरूरत पाकिस्तान के सैन्य दुस्साहस से सावधान रहने और उसे करारा जवाब देने की है, उतनी ही उसके छल-प्रपंच से सतर्क रहने की भी है। हर नागरिक को सजग रहना होगा ताकि देश में शांति और सद्भाव बना रहे। इससे सेनाओं को हर चुनौती का सामना करने का संबल मिलेगा। पाकिस्तान के साथ दुनिया को भी यह संदेश जाना ही चाहिए कि आज का भारत नए मिजाज का भारत है। इस बदले हुए मिजाज का परिचय देने में राजनीतिक नेतृत्व की महती भूमिका है। इस भूमिका के निर्वाह के लिए केवल राजनीतिक परिपक्वता का प्रदर्शन नहीं होना चाहिए, बल्कि सेना की जरूरतों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने की तत्परता भी दिखाई जानी चाहिए। यह ठीक नहीं कि जब देश युद्ध जैसे हालात से दो-चार है, तब वायुसेना को निर्णायक मजबूती देने वाले राफेल विमानों का सौदा अदालत में है। ऐसी राजनीति राष्ट्र हित में बाधक है।

● *हेमंत कुमार, गोराडीह, भागलपुर*

मिग की मार

अच्छी तकनीक के सफलतापूर्वक संचालन के लिए कुशल प्रशिक्षण की जरूरत होती है जिसकी एक पहल हाल के समय में भारतीय मिग-21 द्वारा पाकिस्तान के एफ-16 को मार गिराए जाने के रूप में देखने को मिलती है। यह सर्वविदित है कि अमेरिकी एफ-16 विमान रूसी विमान मिग-21 की तुलना में आधुनिक तकनीकों से लैस हैं। पाकिस्तान ने 1982-83 के दौरान अमेरिका से लगभग 80 एफ-16 विमान खरीदे थे जिनमें प्रत्येक की कीमत लगभग 18 मिलियन डॉलर थी। तब की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इसका पुरजोर विरोध किया था। सन 1961 में भारत ने रूस से मिग-21 को खरीदा जिसकी कीमत प्रति विमान लगभग दो मिलियन डॉलर थी और 1964 में सुपर सोनिक लड़ाकू विमान के रूप में भारतीय वायुसेना में शामिल किया गया था ।

हालांकि प्रशिक्षित पायलटों और संसाधनों की कमी के कारण 1964 के भारत-पाक युद्ध में मिग-21 की सीमित भूमिका रही थी फिर भी मिग-21 का अतीत चुनौतियों से भरा रहा क्योंकि इसने बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के दौरान पाकिस्तान के एफ-104 स्टार फाइटर, एफ-6 और सी-130 हर्कुलस को कड़ी मात दी थी। 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान कच्छ के रण में मिग-21 ने पाकिस्तान की ब्रिगेड अटलांटिक पनडुब्बी को ध्वस्त किया था। पिछले दिनों भारतीय वायु सेना के जांबाज विंग कमांडर अभिनंदन ने अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए एफ-16 विमान को मार गिराया जिससे अमेरिका सहित विश्व की तमाम महाशक्तियां स्तब्ध रह गईं कि कैसे लगभग 60 साल पुराने रूसी मिग-21 ने अत्याधुनिक तकनीकों से लैस अमेरिकी एफ-16 को मार गिराया! अभिनंदन ने अपने कौशल और पराक्रम का परिचय देते हुए संसार में भारतीय वायु सेना का लोहा मनवाया है।

● *सुशील प्रभाकर, जालौन, उत्तर प्रदेश*

किसलिए कर्ज

वर्ष 2016 से 2018 तक बैंकों द्वारा दिए गए कुल कर्ज में नौ प्रतिशत प्रति वर्ष की वृद्धि हुई है जो निश्चय ही सम्मानजनक दिखती है लेकिन इसमें अधिकतर हिस्सा व्यापारिक, व्यक्तिगत और मकान खरीदने के लिए कर्ज आदि का है। अर्थव्यवस्था के उत्पादक क्षेत्र यानी उद्यम, पर्यटन और प्रौद्योगिकी में बैंक कर्ज की वृद्धि दर मात्र 0.5 प्रतिशत प्रति वर्ष रही है। इसका मतलब है कि अर्थव्यवस्था के उत्पादक हिस्से मंद पड़े हुए हैं। लोगों द्वारा खपत के लिए कर्ज लिया जा रहा है न कि उत्पादन के लिए। ऐसा संभव है कि लोगों की आय कम होने के कारण वे ऋण लेकर खर्च चला रहे हों। अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए लोगों को फैक्ट्री जैसे उद्योगों के लिए ऋण लेना चाहिए जबकि ऐसा नहीं हो रहा। इसलिए व्यापार के बढ़ते सूचकांक को अर्थव्यवस्था से जोड़ना अनुचित है। अगर ऐसी ही स्थिति बनी रही तो मंदी बढ़ती जाएगी और देश विकासशील ही बन कर रह जाएगा। सरकार को इस पर गौर करना चाहिए।

● *वाजिद अली, आंबेडकर कॉलेज, दिल्ली*

चौपाल

किसी भी मुद्दे या लेख पर अपनी राय हमें भेजें। हमारा पता है : ए-8, सेक्टर-7, नोएडा 201301, जिला : गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

आप चाहें तो अपनी बात ईमेल के जरिए भी हम तक पहुंचा सकते हैं। आइडी है : chaupal.jansatta@expressindia.com